ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 206-207
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ का सामाजिक–शैक्षिक योगदान

डॉ0 राज कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर– दिग्विजयनाथ एल0टी0 प्रशिक्षण महाविद्यालय, सिविल लाइन्स, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-20.09.2023, Revised-23.09.2023, Accepted-27.09.2023 E-mail: raj95292@gmail.com

सारांशः ***स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज की एकता–अखण्डता कैसे सुनिश्चित की जाय, यह गम्भीर समस्या थी। जन्मना जाति व्यवस्था के श्रेष्ठतावाद एवं अश्पृश्यता (छुआछूत) जैसी गम्भीर समस्या के कारण समाज विघटित तथा कमजोर होने के कगार पर खड़ा था, क्योंकि भारत विभाजन में ये भी सबसे बड़ा कारण था। भारतीय शासन उदासीन था। महन्त दिग्विजयनाथ ने सामाजिक–शैक्षिक पुनर्जागरण के साथ–साथ राजनीतिक मंच पर भारतीय समाज को एकता–अखण्डता के सूत्र में बाधने के लिए उन्हें शिक्षित एवं संगठित करने का विगुल फूंक चुके थे। उनके उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ उनके सक्रिय सहयोगी एवं अनुयायी बने तथा इस धारा को आगे बढ़ाने में प्रबल भूमिका निभायी।***

कुंजीभूत शब्द– एकता–अखण्डता, जाति व्यवस्था, श्रेष्ठतावाद, अस्पृश्यता, समाज विघटित, उदासीन, सामाजिक–शैक्षिक पुनर्जागरण।

महन्त अवेद्यनाथ राजनीति में सेवा भाव के साथ आये थे। महन्त अवेद्यनाथ धर्म दर्शन एवं योग के ज्ञाता थे।[1] वे महन्त दिग्विजयनाथ के साथ–साथ शिष्य रूप में ही राजनीति में सक्रिय हो भी चुके थे। सन् 1962 में उत्तर प्रदेश की तीसरी विधान सभा चुनाव में 'मानीराम विधानसभा' से चुनाव जीतकर महन्त अवेद्यनाथ पहली बार विधानसभा सदस्य बने। और 1967, 1974 व 1977 तक 196–मानीराम विधासभा से चुनाव में विजयी होते रहे। सन् 1969 में महन्त दिग्विजयनाथ के ब्रह्मलीन होने पर सन् 1970 ई0 में हुए लोकसभा के उपचुनाव में गोरखपुर की सम्मानित जनता ने उन्हें पहली बार ससम्मान संसद में भेजा।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत– 19 फरवरी सन् 1980 में दक्षिण भारत के मीनाक्षीपुरम्[2] में हुए धर्म परिवर्तन की घटना से आहत महन्त अवेद्यनाथ ने राजनीति से सन्यास लेकर भारतीय समाज में व्याप्त विषमता को दूर करने के लिए जनजागरण अभियान प्रारम्भ कर दिया।[3] मीनाक्षीपुरम् का नाम परिवर्तित कर 'रहमत नगर' कर दिया गया। बड़े धूमधाम से इस धर्मान्तरण समारोह में आस–पास के तेनाक्षी, कड़यनल्लुर, वदकरी एवं वननगर में आदि अनेक गांवों के मुसलमान अपने–अपने परिवारों के साथ सम्मिलित हुए। कड़यनल्लुर के विधायक हमीद ने सक्रिय भागीदारी निभायी। इस समारोह में 180 हिन्दू परिवारों (हरिजन) धर्मान्तरित कर दिया गया।[4] यह प्रक्रिया एक वर्ष तक आस–पास के क्षेत्रों में चलती रही। मीनाक्षीपुरम् की धर्मान्तरण की घटना का विरोध पूरे देश में शुरू हो गया। महन्त अवेद्यनाथ ने धर्मान्तरण के विरोध में अपनी आवाज बुलन्द की।

सामाजिक समरसता के अग्रदूत महन्त अवेद्यनाथ मीनाक्षीपुरम् में हुए धर्मान्तरण के विरोध में अपनी कड़ी प्रतिक्रिया करते हुए कहा कि ''यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण की शुरूआत है।'' उन्होंने स्वयं अनुभूत करते हुए कहा कि हमें उस मूल कारण पर चोट करनी चाहिए जिससे कारण हमारे ही बन्धु–बान्धव हजारों वर्षों की अपनी परम्परा, धर्म, उपासना, पद्धति बदलने के लिए तैयार हो जा रहे है और मैंने महसूस किया कि जब तक हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का कोढ़ बना रहेगा, अपने ही समाज के उपेक्षित–तिरस्कृत बन्धुओं को कोई भी गुमराह कर धर्मान्तरण के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित कर सकता है। अतः वे गांव–गांव जाकर छुआछूत के विरूद्ध अभियान छेड़ने का निश्चय लेकर निकल पड़े, जिनके कारवां को वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ लगातार आगे बढ़ा रहे हैं।[5]

सन् 1980 ई0 से महन्त अवेद्यनाथ जी ने गांवों में वृहद जन–सम्पर्क एवं तथाकथित अछूतों के साथ बैठकर सहभोज ने क्रांति पैदा कर दी और सामाजिक परिवर्तन की आँधी में जिस तेजी के साथ समाज बदला इतिहास उसका साक्षी हे। काशी के डोमराजा के घर पर महन्त जी की मार्गदर्शन में साधु–संत–संन्यासियों द्वारा किये गये भोजन का पूरे देश में स्वागत हुआ। सदियों से बिखरी पड़ी भारतीय समाज की एकता की सभी कड़ियों को परस्पर मजबूती से जोड़कर सशक्त भारतीय समाज का पुनर्निमाण का क्रम नाथ योगियों ने जारी रखा। अवेद्यनाथ ने अनेक संत–महन्तों के साथ 18 मार्च 1994, गुरूवार के दिन काशी के डोमराजा सुजीत चौधरी के घर उनकी माँ के हाथों भोजन कर अस्पृश्यता पर गहरी चोट करते हुए समता–ममता और समरसता का संदेश दिया।[6] सदियों से चाण्डाल कहकर पुकारे गये इस समाज को मजबूती से एकता के सूत्र में पिरोया। संजीत की माँ भोजन कराते समय इस तरह भाव–विह्वल हो गयी कि उनकी आँखों से अश्रुपात होने लगा। पत्रकार ने जब पूछा कि आप क्यों रो रही हैं? रोते हुए उन्होनें कहा कि– ''आज संजीत के बाऊ होतन तऽ केतना खुश होतन।'' भोजनोपरान्त महन्त अवेद्यनाथ ने डोमराजा के घर में रामजानकी मन्दिर में सिर झुकाया, जो अन्य संतगणों के लिए अनुकरणीय था। बाद में जब पत्रकार ने महत्व अवेद्यनाथ से पूछा कि डोमराजा के घर भोजन करके आपको कैसा लगा? उनका उत्तर था कि –''गंगा के तट पर डोमराजा के घर भोजन कर मैं धन्य हो गया हूँ।[7]

बिहार की राजधानी पटना में स्थित महावीर मन्दिर में सूर्यवंशी लाल उर्फ फलाहारी बाबा (हरिजन) के विखण्डनकारी शक्तियाँ पुजारी नहीं बनने दे रही थी। लेकिन महन्त अवेद्यनाथ ने विघटनकारी शक्तियों को ललकारते हुए उन्हें (फलहारी बाबा) उस मन्दिर (महावीर मन्दिर) का पुजारी नियुक्त कर समरसता से समता का संदेश दिया। उनके साथ इस समारोह में चिन्मयानन्द भी उपस्थित हुए थे। महन्त अवेद्यनाथ के इस समतामूलक कार्य को देश–दुनिया भर में सराहा गया।

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के नायक– अवेद्यनाथ ने अपने–अपने मत के श्रेष्ठतावाद में उलझे हुए धर्माचार्यों को सुलझाकर एक मंच पर लाया परिणामतः जब श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ–समिति का गठन हुआ। 21 जुलाई 1984 को सर्वसम्मति से बाल्मीकि भवन अयोध्या में महन्त अवेद्यनाथ को अध्यक्ष चुन लिया गया।[8] श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति और उस स्थान पर भव्य श्रीराम मन्दिर निर्माण

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

के लिए महन्त अवेद्यनाथ के नेतृत्व में योजनाबद्ध तरीके से जनान्दोलन की रूपरेखा बनी और सन् 1984 से प्रारम्भ किये गये चरणबद्ध आन्दोलन एक हद तक परिणाम पर पहुँचा और उस स्थान पर विदेशी आक्रान्ता द्वारा निर्मित हिन्दू समाज का उपहास और अपमानित करने वाला ढाँचा ध्वस्त कर दिया गया और कारसेवकों ने श्रीराम का भव्य राम मन्दिर अपने हाथों से बना दिया।

पं0 कमलापति त्रिपाठी के मुख्यमंत्रित्व काल में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में पी0ए0सी0 के जवानों ने विद्रोह कर दिया। शासन ने जवानों को हथियार समर्पण करने का आदेश दिया। गोरखपुर स्थित पी0ए0सी0 छावनी में जवानों ने परिसर में रह रहे अधिकारियों तथा उनके परिवार वालों को बन्धक बना लिया और हथियार डालने से इन्कार कर दिया। पी0ए0सी0 जवानों को आत्मसमर्पण कराने के लिए सेना बुलायी गयी। सेना व पी0ए0सी0 के जवान आमने–सामने बन्दूक ताने खड़े थे। स्थित बहुत नाजुक व तनावपूर्ण थी। गोरखपुर के जिलाधिकारी ने महन्त अवेद्यनाथ से स्थिति सुलझाने की प्रार्थना की। महराज जी एक खुली जीप जिस पर भगवाध्वज लगा हुआ था, में बैठकर पी0ए0सी0 छावनी की ओर निकल पड़े। उनकी जीप देखते ही जवानों ने नाथयोगी की जय–जयकार करनी शुरू कर दी। सभी पक्षों से उनके वार्तालाप के फलस्वरूप सभी बन्धक अधिकारी व उनके घरवालों को मुक्त कर दिया गया तथा एक सम्मानजनक समझौता हुआ।[9]

जब उर्वरक कारखाना निर्माणाधीन था। कारखाने के चहारदीवारी के निर्माण के समय किसान मुआवजा राशि को लेकर धरना दे रहे थे। किसानों पर अत्याचार होता देख महन्त अवेद्यनाथ किसानों के साथ धरने पर बैठ गये और उन्होंने किसानों के साथ स्वयं की गिरफ्तारी दी। अन्त में शासन को विवश होकर मुआवजे की राशि में वृद्धि करनी पड़ी।[10]

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में योगदान– भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप शिक्षा तंत्र खड़ा करने की नींव महन्त दिग्विजयनाथ ने सन् 1932 में ही रख दी थी। अवेद्यनाथ ने अपने वरेण्य गुरूदेव के सपनों को साकार किया उन्होंने अपनी निष्ठा एवं दृढ़ इच्छाशक्ति व सुदीर्घकालीन तपस्या तथा अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध और समुन्नत करते हुए ''महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद'' को पुष्पित व पल्लवित करते हुए उसे वृहत्तर स्वरूप प्रदान किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के दो कालेज – पहला कालेज महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं दूसरा महाराणा महिला महाविद्यालय समर्पित कर दिये जाने के बाद महन्त दिग्विजयनाथ की स्मृतियों को संजोय हुए महन्त अवेद्यनाथ शिक्षा की धारा को आगे बढ़ाते हुए सन् 2005 महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ एवं सन् 2006 में महाराणा प्रताप महाविद्यालय, रामदत्तपुर स्थापित कर दिया। गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय, गुरु श्री गोरखनाथ योग संस्थान, महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय, एल0टी0 के साथ बी0एड्0 की कक्षायें बढ़ी, प्रताप आश्रम का छात्रावास का संचालन इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक परम्परागत शिक्षण संस्थानों के साथ–साथ तकनीकी और स्वास्थ्य शिक्षा के संस्थानों को स्थापित कर एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संस्थानों में हजारों छात्र–छात्रायें रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ भारतीयता तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ रहे हैं। सम्भवतः यह देश का एकमात्र शिक्षा संस्थान है जो साढेघ छः सौ छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति देता है तथा विद्यार्थियों को गोद लेकर उनके समग्र विकास में भारतीयता को सर्वाधिक महत्व देता है। अतः उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि – ''सदियों–सदियों से भारतीय समाज में कोढ़ की तरह जड़ जमा चुके अस्पृश्यता (छुआछूत) पर नाथ योगी ने कड़ा प्रहार किया और समरसता से समता का संदेश दिया। अवेद्यनाथ के अथक् प्रयास को स्पष्टतः देखा जा सकता है। उन्होंने भारतीय समाज, शिक्षा व संस्कृति का आजीवन संरक्षण व उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे महन्त अवेद्यनाथ के सामाजिक–शैक्षिक योगदान के रूप में देखा जा सकता है। अन्त में स्पष्टतः कहा जा सकता है कि नाथयोगी लोमंगल के योगी थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://hi.m.wikipedia.org,date14.7.2023,time8:15AM
2. वही।
3. गुप्त एवं राव (2016), 'राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ स्मृति ग्रन्थ', दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, पृ0 63.
4. वही, पृ0 64.
5. राव, प्रदीप कुमार (2019), 'नाथपंथ का समाज दर्शन', गोरखपुरः महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ, पृ0 33.
6. गुप्त एवं राव (2016), राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ स्मृति ग्रन्थ, दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, पृ0 65.
7. वही, पृ0 65.
8. वही, पृ0 65.
9. वही, पृ0 79.
10. वही, पृ0 80.

*****